ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-7* October- 2016
Anthology : The Research

वर्तमान वैश्विक राजनीति में दक्षिण एशिया

विजय लक्ष्मी यादव
असिस्टेंट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान,
रमाबाई राजकीय महिला स्नाकोत्तर महाविद्यालय,
अकबरपुर अम्बेडकरनगर।

सारांश

दक्षिण एशिया की सबसे प्रमुख समस्या इसके देशों के बीच आपसी विवाद की स्थिति है, जिसके कारण इनके बीच अक्सर संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती हैं और क्षेत्रीय शांति भंग होने की समस्याएं बढ़ती हैं यदि भारत पाकिस्तान के सन्दर्भ में देखा जाए तो इन दोनों देशों के बीच का आपसी संघर्ष सबसे ज्यादा खतरनाक स्थिति उत्पन्न करने वाला वाला रहा हैं।

मुख्य शब्द : राजनीति एशिया भारत, पाकिस्तान, अर्न्तराष्ट्रीय, क्षेत्रीय, संघर्ष, आर्थिक, युद्ध,

प्रस्तावना

दक्षिण एशिया वर्तमान युग में अर्न्तराष्ट्रीय राजनीति का महत्वपूर्ण बिन्दु है, दक्षिण एशिया में कुल सात देश शामिल हैं, इसमें भारत के अतिरिक्त पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश, मालद्वीव तथा श्रीलंका शामिल हैं। इस क्षेत्र में विश्व आबादी का 5वॉ हिस्सा निवास करता है विभिन्न आंकड़ों के आध्ययन से पता चलता है कि दक्षिण एशिया आर्थिक स्वास्थ्य तथा शिक्षा के दृष्टि से पिछड़ा हुआ क्षेत्र है। नेपाल के अतिरिक्त सम्पूर्ण दक्षिण एशिया द्वितीय विश्व युद्ध के पूर्व अंग्रेजों के औपनिवेशिक अधिपत्य में था, इसके परिणाम स्वरूप इस क्षेत्र को समान आर्थिक, राजनीतिक व प्रशासनिक समस्याओं का सामना करना पड़ा।

उद्देश्य

दक्षिण एशिया में क्षेत्रीय तत्वों का अध्ययन उतना आसान नहीं है जितना कि यूरोप में इसका कारण है कि इस क्षेत्र में देशों में औपनिवेशिक तत्वों के साथ संक्रमणशील समाज जिसमें राष्ट्र और राज्य निर्माण के लक्ष्य अभी पूरे नहीं हो पाये हैं। कुछ विद्वान भारत को दक्षिण एशिया की प्रधान शक्ति मानते हैं, इसके पीछे भारत की परमाणु शक्ति सम्पन्नता, भौगोलिक दृष्टि से अधिकांश दक्षिण एशियाई देशों के साथ प्रत्यक्ष सम्पर्क तथा दक्षिण एशिया के सभी सांस्कृतिक, जनजातीय एवं धार्मिक तत्वों की भारत में उपस्थिति को माना जाता हैं, इस क्षेत्र के देशों की दार्शनिक श्रृंखला तथा आर्थिक प्रक्रियाएं भी मूलतः भारत से सम्बन्धित हैं भारत के पश्चात् इस क्षेत्र का सबसे अधिक शक्ति सम्पन्न तथा विकासशील देश पाकिस्तान है।

दक्षिण एशिया की स्थिति का विश्लेषण

दक्षिण एशिया में शक्ति संरचना पूर्णतया अनियंत्रित तथा असंतुलित होने का प्रमुख कारण है भार और पाकिस्तान दो

शक्तियां इस क्षेत्र में अपने प्रवेश को सम्भव बना पाती है। यद्यपि कि भारत एक शक्तिशाली ताकत के रूप में उभर रहा है, परन्तु चीन तथा अमेरिका द्वारा अन्य दक्षिण एशियाई देशों के लिए बड़े भाई (Big Brother) की भूमिका अदाकर संतुलन को बिगाड़ने का प्रयास निरन्तर जारी रहती है।

अफगास्तिान में रूसी सेनाओं के प्रवेश के कारण जो अन्तर्राष्ट्रीय समीकरण बना उसने इस क्षेत्र को विशेष रूप से प्रभावित किया, पाकिस्तान को अमेरिका द्वारा शस्त्र पूर्ति किये जाने के कारण नवीन शीत युद्ध का अमेरिका से दक्षिण एशिया में स्थानान्तरण हो गया। शीत युद्ध काल में पाकिस्तान के अतिरिक्त अन्य सभी देशों में गुट–निरपेक्ष विदेश नीति का पालन किया, वर्तमान समय में पाकिस्तान ने भी गुट निरपेक्ष आन्दोलन की सदस्यता ग्रहण कर ली है।

भौगोलिक आर्थिक तथा सांस्कृतिक तत्वों में समानता होने के बावजूद दक्षिण एशिया से सदैव आपसी विवाद उठते रहे हैं, इन विवादों का प्रमुख कारण लम्बा औपनिवेशिक शासन माना जाता है, जिसमें अंग्रेजों ने पड़ोसी देशों के साथ निश्चित भौगोलिक सीमा रेखा का निर्धारण नहीं किया। अंग्रेजों ने भारत राज्य को अप्राकृतिक रूप से विभाजित करके कश्मीर, फरक्क, गंगा नदी के जल बंटवारे की समस्या आदि विवादों को जन्म दिया। दक्षिण एशिया में शांति सहयोग तथा विकास को प्रोत्साहित करने के लिए सन् 1985 में ''दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन'' का सृजन किया गया। इसके द्वारा सभी दक्षिण एशियाई देशों को आपसी सहयोग तथा तालमेल स्थापित करने के लिए एक मंच प्राप्त हुआ।

दक्षिण एशिया के देशों की समस्याओं में अत्यंत समानता होने क बावजूद सभी देशों द्वारा विकास की भिन्न–भिन्न पद्धतियों को अपनाया गया। पाकिस्तान तथा बांग्लादेश को पड़ोसी देशों के बीच समय–समय पर उठने वाले विवाद। इन दो प्रमुख शक्तियों के बीच आपसी विवाद के कारण विदेशी

सदैव यह अहसास रहता है कि भारत ने विभाजन के परिणाम स्वरूप बहुत कुछ लिया है। अतः भारत विरोध द्वारा अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास करते रहते हैं। इस क्षेत्र के देशों मे आपसी व्यापार की मात्रा अत्यंत कम है, इसका कारण यह कि इस क्षेत्र के देश सदैव इस बात से भयभीत रहते हैं कि कहीं बड़े देशों की अर्थव्यवस्था छोटे देशों की अर्थव्यस्था को निगल न जाए।

दक्षिण एशिया की आन्तरिक राजनीतिक प्रक्रिया पर ध्यान दें तो स्पष्ट होता है कि दक्षिण एशिया में राजनीतिक व्यवस्था एक समान नहीं है। पाकिस्तान तथा बांग्लादेश में अनेक बार गैर–लोकतांत्रिक सैन्य तानाशाही सरकारों की स्थापना हुयी है।

क्षेत्रीय असुरक्षा को बढ़ाने में इन देशों का प्रमुख योगदान है। पाकिस्तान शिक्षा, स्वास्थ्य और मानव विकास के क्षेत्र के पिछड़ा है, जिसके कारण उसकी अधिकांश जनता बेरोजगार है। उद्योगों और व्यापार का विकास भी समुचित रूप से नहीं हुआ है जिसके कारण अधिकांश जनता धार्मिक उन्मादियों की बातों में आकर आतंकवाद को प्रश्रय व प्रोत्साहन देने के लिए उनके साथ आ खड़ी होती हैं। कमजोर अर्थव्यवस्था के कारण इसे अक्सर विदेशी सहायता की आवश्यकता पड़ती है जिससे चीन, और अमेरिका जैसी महाशक्तियाँ इस पर अपना प्रभाव बढ़ाने लगती है और अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसका प्रयोग करने लगती हैं।

पाकिस्तान में एक रूढ़िवादी समाज है जिसमें तीन चीजें सबसे ज्याद प्रभावकारी भूमिका निभाती हैं वह हैं 'मुल्ला' मस्जिद और 'मिलिटरी' जिसकी वजह से अनेक बार राजनीतिक स्थिरता उत्पन्न हो जाती है और क्षेत्रीय व वर्गीय संघर्ष के कारण आंतरिक अशांति उत्पन्न हो जाती है। पाकिस्तान के पास संसाधनों की तुलना में जनसंख्या का

आधिक्य है और ज्यादातर जनसंख्या कृषि पर निर्भर है और मानसून की भूमिका अत्यंत ज्यादा है पाकिस्तान सीमा विवाद व जल विवाद जैसे आपसी मुद्दों के बातचीत के जरिए न सुलझाकर उसे अर्न्तराष्ट्रीय मंचों पर उठाने का प्रयास करता है जिससे विश्व राजनीति में दक्षिण एशिया की नकारात्मक छवि बनती है।

पाकिस्तान के ही समान भारत से अलग होकर बना दूसरा देश बांग्लादेश भी अक्सर भारत के साथ सीमा विवाद मे उलझा रहता है। पाकिस्तान ने अपनी आतंकवादी गति विधियां चलाने का प्रमुख अड्डा बांग्लादेश के कमजोर होने तथा व्यापार वाणिज्य का विकास न होने से भारत के ओर जाने वाले शरणार्थियों और अधिक जनसंख्या के भार के कारण अत्यंत कमजोर स्थिति में उभर कर सामने आता है। जहाँ तक नेपाल का सम्बन्ध है नेपाल कभी भी उपनिवेश नहीं रहा परन्तु राजशाही के पतन के बाद वहाँ माओवादी शासन का चीन की ओर अधिक झुकाव भारत के लिए खतरे का संकेत है। नेपाल के जरिए चीन दक्षिण एशिया के देशों में अपने सामान की तस्करी करता है। इसके कारण नेपाल में अपने उद्योगों का विकास सम्भव नहीं हो पाया है। भूटान राजतंत्रात्मक व्यवस्था के अर्न्तगत लोकतांत्रिक प्रक्रिया अपनाने वाला क्षेत्र है, प्रचुर संसाधनों की उपलब्धता होने के बावजूद भी धन के अभाव में यह अपना पूर्ण–विकास करने में संभव नहीं हो पाता है, यद्यपि की अभी भूटान शांत क्षेत्र है, परन्तु चीन के नजदीक होने के कारण और एक 'बफर स्टेट' होने के कारण इसमें अशांति की आशंका बनी रहती हैं।

पाकिस्तान जो कि सन् 2001 से विश्व आतंकवाद के क्षेत्र के रूप में चिन्हित किया जाता रहा है वास्तव में द0एशिया क्षेत्र का सबसे अस्थिर देश है। अमेरिकी सेनाओं की यहाँ उपस्थिति से अक्सर दक्षिण एशिया क्षेत्र भयग्रस्त रहता है। आने वाले समय में मुख्य समस्या यह कि अमेरिकी सेना के वापस जाने के बाद जो लड़ाके खाली हुए उन्हें कहॉ विस्थापित किया जायेगा। पाकिस्तान की सीमा अफगास्तिान और भारत दोनों से जुड़ती है। ऐसे में संभव है कि एक दशक से शांत रह रही सीमा पार आतंकवाद पुनः जोर पकड़ सके। तालिबान से स्वतंत्र हुआ अफगनिस्तान की अर्थव्यवस्था सबसे कमजोर है और यहाँ राजनीतिक अस्थिरता सबसे ज्यादा है जिससे सम्भव है कि अन्य कोई विश्व शक्ति इसे अपने प्रभाव में लाने के लिए किसी अन्य प्रकार का षड्यंत्र करके क्षेत्र को अशांत कर दे।

श्रीलंका जो भारत के दक्षिणतम बिन्दु पर स्थित है। तमिल और सिंहली विवाद के कारण अशांत रहता है यद्यपि कि वर्तमान समय में एल0टी0टी0ई0 के पतन के पश्चात् लोकतंत्रीकरण की ओर अग्रसर है, परन्तु अभी भी वहाँ लोकतान्त्रिक व्यवस्थाएं मजबूत नहीं हो पायी है, जिसके कारण वहाँ विश्व शक्तियों का हस्तक्षेप बढ़ने की सभावना है। अन्य दक्षिण एशिया देशों के समान श्रीलंका भी आर्थिक रूप से कमजोर व मानव विकास में अत्यन्त पीछे है और यहाँ आपस में होने वाला वर्गीय संघर्ष प्रमुख समस्या है। चारों ओर से समुद्री सीमाओं से घिरा होने के कारण यह समुद्री व्यापार का प्रमुख केन्द्र हो सकता है। दक्षिण एशिया पर प्रभाव जमाने के लिए विश्व शक्तियां यहाँ अपना सैन्य अड्डा बनाने की फिराक मे रहती है। श्रीलंका के समान ही मालद्वीप भी समुद्री देश है और यह भी किसी प्रकार दक्षिण एशियाई देशों की स्थिति से भिन्न नहीं है। 'अब्दुल गयूम' के नेतृत्व में लगभग 30 वर्षों तक यहॉ शांतिपूर्ण शासन रहा, परन्तु जब युवा अन्नी नसीद ने शासन संभाला तो भारत ने किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया। मालद्वीप की सबसे बड़ी समस्या वैश्विक तापन के जरिए होने वाले समुद्र तल की सीमा में होने वाली वृद्धि है जिससे मालद्वीव डूब के कगार पहुने की स्थिति में हो सकता है।

भारत की भूमिका

यदि भारत चाहता है कि दक्षिण एशिया में शांति स्थापित हो तो इसके लिए

आवश्यक है कि वह अपने पड़ोसी देशों के प्रति एक उदारवादी रवैया अपनाए। दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशों में किसी न किसी प्रकार के प्राकृतिक संसाधनों की प्रचुरता है, परन्तु उनके पास उसके दोहन के साधनों का अभाव है, जिसके कारण वे उसका सदुपयोग नहीं कर पाते यदि भारत अपने विकसित तकनीकी ज्ञान से उन्हें सहयोग करे तो इन संसाधनों का समुचित उपयोग किया जा सकता है। इससे भारत भी लाभ उठा सकता है जैसे भूटान में विद्युत उत्पादन की अपार संभावना है, परन्तु उसके पास धन और तकनीक का अभाव होने के कारण वह ऐसा नहीं कर पर रहा है। भारत को उदारवादी रवैया एक अन्य कारण से अपनाना आवश्यक है क्योंकि यदि दक्षिण एशियाई देश तकनीकि मदद के लिए महाशक्तियों से सहयोग मांगगे तो दक्षिण एशिया क्षेत्र में महाशक्तियों का हस्तक्षेप बढ़ेगा जो कि वाद में असुरक्षा और संघर्ष का कारण बन सकता है।

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया के कुछ देशों का विकास इस कारण से नहीं हुआ कि वहां आधारभूत संरचनाओं का अभाव है जैसे– अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान में इसके कारण इनका सम्पूर्ण विकास प्रभावित होता है और इनकी अर्थव्यवस्था गतिशीलता नहीं पकड़ पाती ऐसी स्थिति में भारत की जिम्मेदारी बनती है कि वह इन क्षेत्रों में सहयोग करे। भारत की पूरी विश्व राजनीति मे ंसहभागिता है वह अनेक क्षेत्रीय, आर्थिक और अर्न्तराष्ट्रीय संगठनों का सदस्य है जिसके माध्यम से भी भारत को आर्थिक मदद दिलाने में सहयोग करना चाहिए। भारत दक्षिण एशिया में सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता हैं जबकि अन्य दक्षिण एशियाई देश स्थानीय व्यापार तक ही सीमित है। वैश्वीकरण के युग में व्यापार वाणिज्य पर अंकुश समाप्त होने के बाद यूरोपीय देशों ने इन देशों को अपने उत्पादन के बाजार के रूप में प्रयोग करना शुरू कर दिया है जिसके कारण इन देशों में उत्पादित होने वाला माल इनका मुकाबला नहीं कर पाता और ये देश घाटे का सौदा करते है। यदि भारत इन दक्षिण एशियाई देशों को कुछ सीमित प्रतिबन्धों के साथ अपने बाजार में अनुमति देता है। तो वास्तव में दक्षिण एशिया क्षेत्र वाणिज्य और व्यापार में प्रगति कर सकेगा।